

National Register of Citizens (NRC)

इस लेख में क्या अपेक्षा करें:

1. चर्चा में क्यों?
2. एनआरसी का परिचय
3. एनआरसी को समझना
4. एनआरसी की आवश्यकता क्यों है?
5. असम में एनआरसी: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
6. बहिष्कृत व्यक्तियों के लिए कानूनी उपाय
7. एनआरसी से जुड़ी आलोचनाएँ और विवाद
8. आगे की राह
9. निष्कर्ष

चर्चा में क्यों:

- हाल ही में, असम ने भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) से असम के राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को अंतिम रूप दिए जाने तक गहन मतदाता सूची संशोधन को स्थगित करने का अनुरोध किया है।
- राज्य सरकार चिंतित है कि अंतिम एनआरसी को शामिल किए बिना मतदाता सूची में संशोधन करने से ऐसे व्यक्तियों के नाम शामिल हो सकते हैं जिन्हें बाद में सूची से बाहर कर दिया जा सकता है।



परिचय :

- राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) भारत के वैध नागरिक माने जाने वाले व्यक्तियों का आधिकारिक रिकॉर्ड है।
- वैध नागरिकों और अवैध प्रवासियों के बीच अंतर करके, एनआरसी को राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के एक साधन के रूप में देखा जाता है।
- एनआरसी कार्यान्वयन की प्रक्रिया ने विशेष रूप से असम में महत्वपूर्ण बहस छेड़ दी है, जहाँ इसकी आवश्यकता और कार्यान्वयन का प्रश्न राजनीतिक, सामाजिक और कानूनी चर्चाओं का केंद्र बिंदु बन गया है।

NRC को समझना

- एनआरसी कई कानूनों द्वारा शासित है, जिनमें 1955 का नागरिकता अधिनियम, 1946 का विदेशी अधिनियम और 1920 का पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम शामिल हैं।
- पहला एनआरसी 1951 की जनगणना के बाद दर्ज किया गया था, लेकिन इसका दायरा सीमित था।
- आज, असम एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ NRC क्रियाशील है, यह एक ऐसी प्रणाली है जिसे 2014 से भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनिवार्य और निगरानी में रखा गया है।

NRC की आवश्यकता क्यों है ?

NRC राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक समानता और आतंजन नियंत्रण से संबंधित कई चिंताओं का समाधान करता है:

- 1. अवैध प्रवासियों की पहचान:** NRC वैध नागरिकों और अनधिकृत प्रवासियों के बीच अंतर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी लाभ और अधिकार केवल वैध निवासियों को ही मिलें।
- 2. राष्ट्रीय सुरक्षा:** यह सुनिश्चित करके कि केवल सत्यापित नागरिक ही इसमें शामिल हों, NRC देश में प्रवेश करने वाले अवैध प्रवासियों से उत्पन्न सुरक्षा खतरों के जोखिम को कम करने में मदद करता है।
- 3. सामाजिक न्याय:** NRC यह सुनिश्चित करके एक अधिक न्यायसंगत व्यवस्था प्रदान कर सकता है कि केवल पात्र व्यक्तियों को ही सामाजिक कल्याण लाभ प्राप्त हों, इस प्रकार वैध नागरिकों के अधिकारों की रक्षा होती है।

4. स्वदेशी समुदायों की सुरक्षा: असम जैसे क्षेत्रों में, ऐसी चिंताएँ हैं कि पड़ोसी देशों, विशेष रूप से बांग्लादेश से अनियंत्रित प्रवासन, जनसांख्यिकीय संतुलन के लिए खतरा बन रहा है और स्थानीय समुदायों को विस्थापित कर रहा है। एनआरसी को इन चिंताओं के समाधान के रूप में देखा जा रहा है।

5. चुनावी हेराफेरी रोकना: अवैध प्रवासन, खासकर असम जैसे राज्यों में, झूठे वोट बैंक बनाने का संदेह पैदा करता है। एनआरसी का उद्देश्य इन मुद्दों का समाधान करना और एक निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया सुनिश्चित करना है।

असम में NRC : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

असम के NRC की गहरी ऐतिहासिक जड़ें हैं, जो भारत की आज़ादी के बाद पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से बड़े पैमाने पर हुए प्रवास से उपजी हैं। इस प्रवास के परिणामस्वरूप जनसांख्यिकीय बदलाव हुए हैं, जिससे असम की पहचान को लेकर तनाव पैदा हुआ है।

1. असम आंदोलन: 1970 के दशक के उत्तरार्ध में, अखिल असम छात्र संघ (AASU) ने अवैध प्रवासियों की पहचान और निर्वासन की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू किए। इन विरोध प्रदर्शनों के परिणामस्वरूप अंततः 1985 में असम समझौते पर हस्ताक्षर हुए, जिसमें 24 मार्च, 1971 के बाद आए अप्रवासियों की पहचान करने और उन्हें हटाने का आह्वान किया गया।

2. NRC अद्यतन प्रक्रिया: असम में NRC अद्यतन 2013 में सुप्रीम कोर्ट के मार्गदर्शन में शुरू हुआ और अंतिम सूची अगस्त 2019 में जारी की गई। प्राथमिक उद्देश्य उन व्यक्तियों की पहचान करना था जो 24 मार्च, 1971 की कट-ऑफ तिथि से पहले असम में मौजूद थे।

3. चुनौतियों का सामना: NRC के महत्व के बावजूद, 1.9 मिलियन से अधिक आवेदकों को अंतिम सूची से बाहर रखा गया, जिससे वैध नागरिकों के बहिष्कार पर व्यापक आलोचना और कानूनी चुनौतियां पैदा हुईं।

बहिष्कृत व्यक्तियों के लिए कानूनी उपाय

असम में अंतिम NRC सूची से 19 लाख से ज़्यादा लोगों को बाहर रखा गया है, और उन्हें अपने बहिष्कार को चुनौती देने का अधिकार है:

- तत्काल हिरासत नहीं: बहिष्कृत व्यक्तियों को तुरंत हिरासत में नहीं लिया जाता, क्योंकि निर्वासन की प्रक्रिया जटिल होती है। बांग्लादेश के साथ प्रत्यावर्तन समझौते का अभाव इस मामले को और जटिल बना देता है।

- **अपील दायर करना:** बहिष्कृत व्यक्ति अपनी नागरिकता साबित करने के लिए विदेशी न्यायाधिकरण में अपील कर सकते हैं, और असफल होने पर, वे उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

NRC से जुड़ी आलोचनाएँ और विवाद :

असम में NRC का कार्यान्वयन चुनौतियों और आलोचनाओं से भरा रहा है:

1. नागरिकों का बहिष्कार: कई वैध नागरिकों को दस्तावेज़ीकरण संबंधी समस्याओं या अभिलेखों में विसंगतियों के कारण बाहर रखा गया है। इन बहिष्कारों ने प्रक्रिया की निष्पक्षता को लेकर चिंताएँ पैदा की हैं।

2. भेदभाव के आरोप: आलोचकों का तर्क है कि NRC प्रक्रिया विशिष्ट समुदायों, विशेष रूप से मुसलमानों को असमान रूप से प्रभावित करती है, जिससे धार्मिक पूर्वाग्रह और बहिष्कार के आरोप लगते हैं।

3. वित्तीय और प्रशासनिक बोझ: NRC प्रक्रिया एक महंगी और समय लेने वाली प्रक्रिया रही है, असम में इसे अपडेट करने की अनुमानित लागत 1,200 करोड़ रुपये से अधिक है, जिसके लिए व्यापक संसाधनों और जनशक्ति की आवश्यकता होती है।

4. दस्तावेज़ी मुद्दे: चाय बागानों और बंगाली हिंदुओं जैसे हाशिए पर रहने वाले समूहों को आवश्यक दस्तावेज़ उपलब्ध कराने में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे एनआरसी से उनके बाहर होने का खतरा है।

5. कानूनी और सामाजिक अस्पष्टता: विदेशी न्यायाधिकरणों में अपने मामले हारने वालों के साथ क्या होता है, इस बारे में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है, जिससे उनकी भविष्य की स्थिति और अधिकारों के बारे में अनिश्चितता पैदा होती है।

आगे की राह

इन चिंताओं को दूर करने और NRC प्रक्रिया को निष्पक्ष एवं कुशल बनाने के लिए, कई कदम उठाए जाने आवश्यक हैं:

1. उन्नत सत्यापन प्रक्रियाएँ: डेटा संग्रह और सत्यापन के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग NRC प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और त्रुटियों को न्यूनतम कर सकता है।

2. पुनः सत्यापन और अपील: गलतियों को सुधारने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी वास्तविक नागरिक सूची से बाहर न रहे, एक मजबूत पुनः सत्यापन तंत्र लागू किया जाना चाहिए।

3. अधिकारों का संरक्षण: यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि एनआरसी प्रक्रिया अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का पालन करे, बाहर किए गए लोगों के अधिकारों की रक्षा करे और यह सुनिश्चित करे कि उन्हें अनुचित रूप से हिरासत में न लिया जाए या निर्वासित न किया जाए।

4. न्यायिक निगरानी: न्यायिक प्रणाली को निष्पक्षता और संवैधानिक मूल्यों के पालन को सुनिश्चित करने के लिए NRC प्रक्रिया की निगरानी में सक्रिय भूमिका निभाते रहना चाहिए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यह सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है कि केवल वास्तविक भारतीय नागरिकों को ही मान्यता दी जाए और अवैध प्रवासियों को इसमें शामिल होने से रोका जाए। हालाँकि राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक न्याय के लिए NRC आवश्यक है, लेकिन इसके कार्यान्वयन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। आगे बढ़ते हुए, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह प्रक्रिया पारदर्शी, समावेशी और मानवाधिकारों का सम्मान करने वाली हो, ताकि कोई भी वैध नागरिक NRC से बाहर न रहे।

अभ्यास प्रश्न:

प्रारंभिक परीक्षा:

1. राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) निम्नलिखित में से किस कानून द्वारा शासित है?

- A) नागरिकता अधिनियम, 1955
- B) विदेशी अधिनियम, 1946
- C) पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम, 1920
- D) उपरोक्त सभी

2. सर्वोच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में असम में NRC अद्यतन प्रक्रिया किस वर्ष शुरू हुई?

- A) 2000
- B) 2013
- C) 2015
- D) 2018

उत्तर:

1. D) उपरोक्त सभी, 2. B) 2013

मुख्य परीक्षा:

1. राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक न्याय और स्वदेशी समुदायों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) की भूमिका पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)
2. असम में एनआरसी के कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों और आलोचनाओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए, जिसमें बहिष्कार, भेदभाव और वित्तीय बोझ जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया हो। इन चुनौतियों का समाधान कैसे किया जा सकता है? (15 अंक, 250 शब्द)



Result Mitra

(वैकल्पिक विषय) 

OPTIONAL SUBJECT

GEOGRAPHY

OPTIONAL

Fee - मात्र 6499 ₹

केवल 21 से 26 जून



OPTIONAL SUBJECT

वैकल्पिक विषय

PSIR

Fee - मात्र 6999 ₹

केवल 01 से 06 जुलाई

